WELLCOME

रूपरेखा:-

- प्रस्तावना
- प्रस्थिति
- प्रस्थिति की परिभाषा
- प्रस्थिति के प्रकार
- एक प्राध्यापक का प्रस्थिति प्रतिमान
- निष्कर्ष
- संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

प्रस्थिति एवं भूमिका का विवेचन सर्वप्रथम राल क्लिफटन ने अपनी पुस्तक द स्टडी ऑफ मैन(1936) में किया उनके अनुसार समाज का कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसे कोई भी प्रस्थिति न प्राप्त रत हो समाजशास्त्री तथ्य इतना है कि उसकी प्रस्थिति निम्न याब उच्च प्रपत्र या अर्जित हो शक्ति है । व्यक्ति जब अपनी क्रियाओं का संपादन समाज या समूह के प्रति मानव के अनुरूप करता है तो इन क्रियाओं की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो जाती है। सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होते ही व्यक्ति की क्रियाएं भूमिका में बदल जाती है ।

प्रस्थिति के अर्थ

प्रस्थिति का विवेचन सर्वप्रथम राल्फ लिप्टन ने अपनी पुस्तक " दी स्टडी ऑफ मैन " में किया । उनके अनुसार समाज का कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसे कोई प्रस्थिति न प्राप्त हो समाजशास्त्री तथ्य इतना ही है कि इसकी प्रस्थिति में या कुछ सदस्य अजीत हो सकती है ।

प्रस्थिति की परिभाषा

राल्फ लिप्टन के अनुसार :-

सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत किसी व्यक्ति को एक समय विशेष में जो स्थान प्राप्त होता है उसी की उस व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति कहते हैं ।

लैपियर के अनुसार :-

लैपियर ने अपनी पुस्तक एभीडायरी आफ सोशल कंट्रोल में लिखते हैं सामाजिक स्थिति सामान्यतः उस पद के रूप में समझी जाती है जो एक व्यक्ति समाज में प्राप्त किए जाते हैं ।

एक प्राध्यापक का प्रस्थिति प्रतिमान

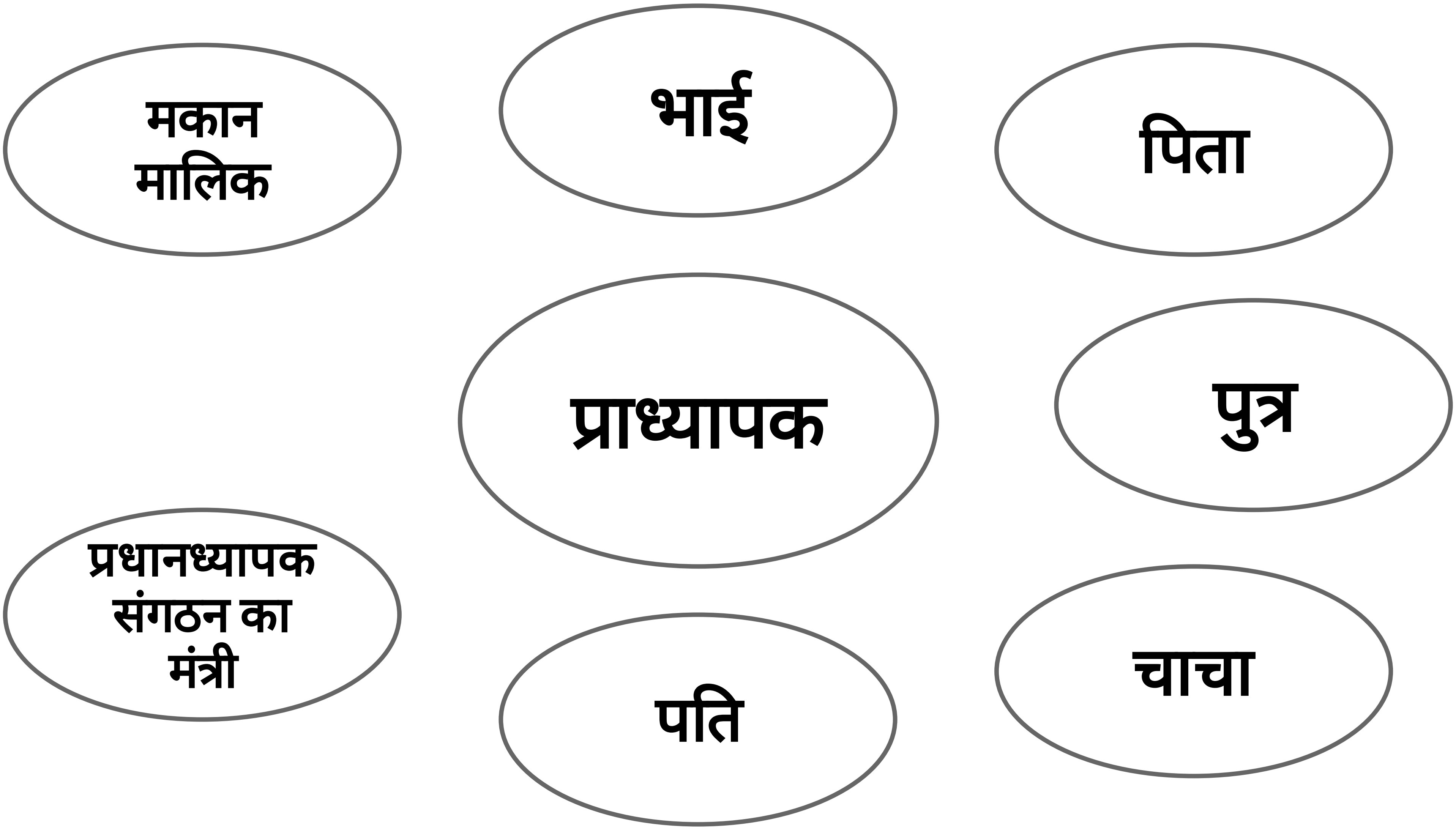

प्रस्थिति के प्रकार

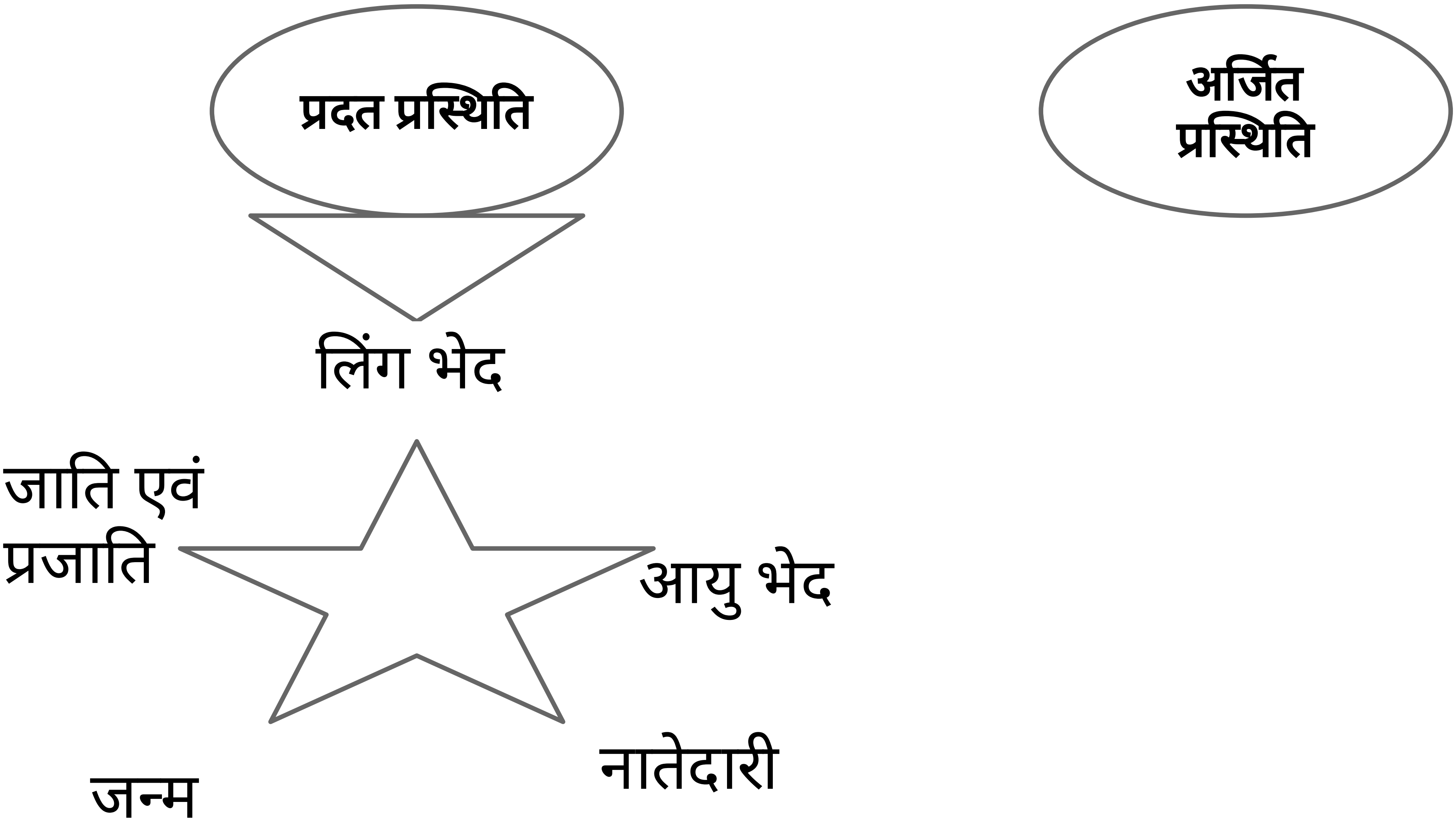

निष्कर्ष

प्रस्थिति दो प्रकार की होती है प्रस्थिति इसका प्रदत प्रस्थिति पहला जो व्यक्ति जन्म लेते ही प्राप्त होती है दूसरा अर्जित प्रस्थिति की अनुरूप कम या अधिक भूमिका का निष्पादन करना पड़ता है । प्रस्थिति के उद्भव का मुख्य स्क्रीन भूमिका होती है । समाज में कोई कोई प्रस्थिति अवश्य धारण करता है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रयागधीन मिश्र - सामाजिक समूह

प्री . एम . एल . गुप्ता - समाजशास्त्र

Thank you